



Bk Mayank

10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - चैरिटी बिगन्स एट होम अर्थात् पहले खुद आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करो फिर दूसरों को कहो, आत्मा समझकर आत्मा को ज्ञान दो तो ज्ञान तलवार में जौहर आ जायेगा"



प्रश्नः-संगमयुग पर किन दो बातों की मेहनत करने से सत्युगी तख्त के मालिक बन जायेंगे?



उत्तरः-1-दुःख-सुख, निंदा-स्तुति में समान स्थिति रहे - यह मेहनत करो। कोई भी कुछ उल्टा-सुल्टा बोले, क्रोध करे तो तुम चुप हो जाओ, कभी भी मुख की ताली नहीं बजाओ।

2. आंखों को सिविल बनाओ, क्रिमिनल आई बिल्कुल समाप्त हो जाए, हम आत्मा भाई-भाई हैं, आत्मा समझकर ज्ञान दो, आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करो तो सत्युगी तख्त के मालिक बन जायेंगे। सम्पूर्ण पवित्र बनने वाले ही गद्दी नशीन बनते हैं।

Mind very well...

10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
ओम् शान्ति। रूहानी बाप रूहानी बच्चों से बात
करते हैं, तुम आत्माओं को यह **तीसरा नेत्र** मिला है
जिसको **ज्ञान का नेत्र** भी कहा जाता है, **उनसे तुम**
देखते हो अपने भाइयों को। तो यह बुद्धि से
समझते हो ना कि **जब हम भाई-भाई को देखेंगे** तो
कर्म-न्द्रियाँ चंचल नहीं होंगी। और **ऐसे करते-करते**

आंखें जो **क्रिमिनल** हैं वह **सिविल** हो जायेंगी।
बाप कहते हैं **विश्व का मालिक बनने के लिए**
मेहनत तो करनी पड़ेगी ना। तो **अभी यह मेहनत**

करो। **मेहनत करने के लिए** बाबा नई-नई गुह्य
प्वाइंट्स सुनाते हैं ना। तो अभी **अपने को भाई-**
भाई समझकर **ज्ञान देने की आदत डालनी** है।
फिर यह जो गाया जाता है कि "**वी आर ऑल**
ब्रदर्स" - यह प्रैक्टिकल हो जायेगा। **अभी तुम सच्चे**
-सच्चे ब्रदर्स हो क्योंकि बाप को जानते हो। **बाप**

तुम बच्चों के साथ सर्विस कर रहे हैं। **हिम्मते बच्चे**
मददे बाप। तो **बाप आकरके** यह **हिम्मत देते हैं**
सर्विस करने की। तो यह सहज हुआ ना। तो **रोज़**
यह प्रैक्टिस करनी पड़ेगी, **सुस्त नहीं होना** चाहिए।

यह **नई-नई प्वाइंट्स** **बच्चों को मिलती हैं,** बच्चे

Points: **ज्ञान** **योग** **धारणा** **सेवा** **M.imp.**

10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जानते हैं कि हम भाइयों को बाबा पढ़ा रहे हैं। आत्मायें पढ़ती हैं, यह रुहानी नॉलेज है, इसे स्प्रीचुअल नॉलेज कहा जाता है। सिर्फ इस समय रुहानी नॉलेज, रुहानी बाप से मिलती है क्योंकि बाप आते ही हैं संगमयुग पर जबकि सृष्टि बदलती है, यह रुहानी नॉलेज मिलती भी तब है जब सृष्टि बदलने वाली है। बाप आकर यहीं तो रुहानी नॉलेज देते हैं कि अपने को आत्मा समझो। आत्मा नंगी (अशरीरी) आई थी, यहाँ फिर शरीर धारण करती है। शुरू से अब तक आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं। परन्तु नम्बरवार जो जैसे आये होंगे, वह वैसे ही ज्ञान-योग की मेहनत करेंगे। फिर देखने में भी आता है कि जैसे जिसने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया, मेहनत किया वह अभी भी ऐसे ही मेहनत करते रहते हैं। अपने लिए मेहनत करनी है। दूसरे कोई के लिए तो नहीं करनी होती है। तो अपने को ही आत्मा समझ करके अपने साथ मेहनत करनी है। दूसरा क्या करता है, उसमें हमारा क्या जाता है। चैरिटी बिगन्स एट होम माना पहले-पहले खुद मेहनत करनी है, पीछे दूसरों को

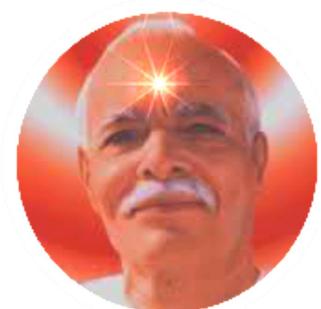


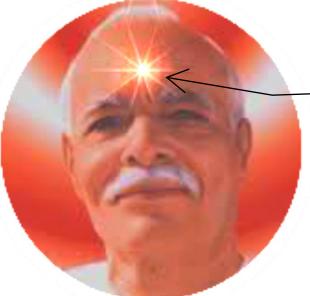
"कबीरा तेरी झोपड़ी,
गल कटिया के पास।
जैसी करनी वैसे भरनी,
तू क्यों भया उदास ॥"

10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
 (भाइयों को) कहना है। जब तुम अपने को आत्मा
 समझ करके आत्मा को ज्ञान देंगे तो तुम्हारी ज्ञान
 तलवार में जौहर रहेगा। मेहनत तो है ना। तो
 जरूर कुछ न कुछ सहन करना पड़ता है। इस
 समय दुःख-सुख, निंदा-स्तुति, मान-अपमान यह
 सब थोड़ा बहुत सहन करना पड़ता है। तो जब भी
 कोई उल्टा-सुल्टा बोलता है तो कहते हैं चुप। जब
 कोई चुप कर देते हैं तो पीछे कोई गुस्सा क्या
 करेंगे। जब कोई बात करते हैं और दूसरा भी बात
 करते हैं तो मुख की ताली बजती है। अगर एक ने
 मुख की ताली बजाई और दूसरे ने शान्त किया तो
 चुप। बस यह बाप सिखलाते हैं। कभी भी देखो
 कोई क्रोध में आते हैं तो चुप हो जाओ, आपही
 उसका क्रोध शान्त हो जायेगा। दूसरी ताली बजेगी
 नहीं। अगर ताली से ताली बजी तो फिर गड़बड़ हो
 जाती है इसलिए बाप कहते हैं बच्चे कभी भी इन
 बातों में ताली नहीं बजाओ। न विकार की, न काम
 की, न क्रोध की।

One hand can't clap, it takes two hands
 to clap.

बच्चों को हर एक का कल्याण करना ही है, इतने जो सेन्टर्स बने हुए हैं किसलिए? कल्प पहले भी तो ऐसे सेन्टर्स निकले होंगे। देवों का देव बाप देखते रहते हैं कि बहुत बच्चों को यह शौक रहता है कि बाबा सेन्टर खोलूँ। हम सेन्टर खोलते हैं, हम खर्च उठायेंगे। तो दिन-प्रतिदिन ऐसे होते जायेंगे क्योंकि जितना विनाश के दिन नज़दीक होते जायेंगे उतना फिर इस तरफ भी सर्विस का शौक बढ़ता जायेगा। अभी बापदादा दोनों इकट्ठे हैं तो हर एक को देखते हैं कि क्या पुरुषार्थ करते हैं? क्या पद पायेंगे? किसका पुरुषार्थ उत्तम, किसका मध्यम, किसका कनिष्ठ है? वह तो देख रहे हैं। टीचर भी स्कूल में देखते हैं कि स्टूडेन्ट किस सब्जेक्ट में ऊपर-नीचे होते हैं। तो यहाँ भी ऐसे ही है। कोई बच्चे अच्छी तरह से अटेन्शन देते हैं तो अपने को ऊंचा समझते हैं। कोई समय फिर भूल करते हैं, याद में नहीं रहते हैं तो अपने को कम समझते हैं। यह स्कूल है ना। बच्चे कहते हैं बाबा हम कभी-कभी बहुत खुशी में रहते हैं, कभी-कभी खुशी कम हो जाती है। तो बाबा अभी समझाते



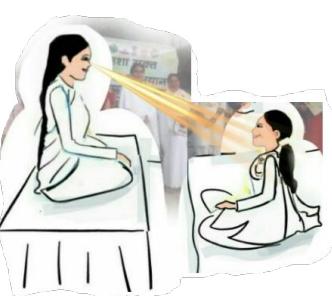
10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन
 रहते हैं कि **अगर** खुशी में रहना चाहते हो **तो**

मनमनाभव, अपने को आत्मा समझो और **बाप**
को भी याद करो। सामने परमात्मा को देखो तो वो
अकाल तख्त पर बैठा हुआ है। ऐसे भाइयों की
तरफ भी देखो, अपने को आत्मा समझ करके
फिर भाई से बात करो। भाई को हम ज्ञान देते हैं।
बहन नहीं, भाई-भाई। आत्माओं को ज्ञान देते हैं

Most imp { **अगर** यह आदत तुम्हारी पड़ जायेगी **तो** तुम्हारी
जो क्रिमिनल आई है, जो तुमको धोखा देती है वह
आहिस्ते-आहिस्ते बन्द हो जायेगी। आत्मा-आत्मा
 में क्या करेगी? **जब** देह-अभिमान आता है **तब**
गिरते हैं। **बहुत कहते हैं** बाबा हमारी क्रिमिनल
आई है। अच्छा क्रिमिनल आई को अभी सिविल
आई बनाओ। बाप ने आत्मा को दिया ही है **तीसरा**
नेत्र। तीसरे नेत्र से देखेंगे तो फिर तुम्हारी देह को
देखने की आदत मिट जायेगी। बाबा बच्चों को
डायरेक्शन तो देते रहते हैं, इनको (ब्रह्मा को) भी
ऐसे ही कहते हैं। **यह** Brahma भी देह में आत्मा को
देखेंगे। तो इसको ही कहा जाता है **रूहानी**
नॉलेज। **देखो,** **पद कितना ऊंच पाते हो।** जबरदस्त

Points: **ज्ञान** **योग** **धारणा** **सेवा** **M.imp.**

समझा?

पद है। तो पुरुषार्थ भी ऐसा करना चाहिए। बाबा भी समझते हैं कल्प पहले मुआफिक सबका पुरुषार्थ चलेगा। कोई राजा-रानी बनेंगे, कोई प्रजा में चले जायेंगे। तो यहाँ जब बैठकर नेष्ठा (योग) भी करवाते हो तो अपने को आत्मा समझ करके दूसरे की भी भ्रकुटी में आत्मा को देखते रहेंगे तो फिर उनकी सर्विस अच्छी होगी। जो देही-अभिमानी होकर बैठते हैं वो आत्माओं को ही देखते हैं। इसकी खूब प्रैक्टिस करो। अरे ऊंच पद



Homework

Value this Time

जागो जागो, समय पहचानो...

पाना है तो कुछ तो मेहनत करेंगे ना। तो अभी आत्माओं के लिए यही मेहनत है। यह रुहानी नॉलेज एक ही दफा मिलती है और कभी भी नहीं मिलेगी। न कलियुग में, न सतयुग में, सिर्फ संगमयुग में सो भी ब्राह्मणों को। यह पक्का याद कर लो। जब ब्राह्मण बनेंगे तब देवता बनेंगे। ब्राह्मण नहीं बने तो फिर देवता कैसे बनेंगे? इस संगमयुग में ही यह मेहनत करते हैं। और कोई समय में यह नहीं कहेंगे कि अपने को आत्मा, दूसरे को भी आत्मा समझ उनको ज्ञान दो। बाप जो समझाते हैं उस पर विचार सागर मंथन करो। जज

करो कि क्या यह ठीक है, हमारे फायदे की बात है?

हमको आदत पड़ जायेगी कि बाप की जो शिक्षा है सो भाइयों को देना है, फीमेल को भी देना है तो मेल को भी देना है। देना तो आत्माओं को ही है। **आत्मा ही मेल, फीमेल बनी है। बहन-भाई बनी है।**

बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को ज्ञान देता हूँ। मैं बच्चों की तरफ, आत्माओं को देखता हूँ और आत्मायें भी समझती हैं कि हमारा परमात्मा जो बाप है वह ज्ञान देते हैं तो इसको कहेंगे यह रुहानी अभिमानी बने हैं। इसको ही कहा जाता स्प्रीचुअल ज्ञान की लेन-देन - आत्मा की परमात्मा के साथ। तो यह बाप शिक्षा देते हैं कि जब भी कोई विजीटर आदि आते हैं तो भी अपने को आत्मा समझ, आत्मा को बाप का परिचय देना है। **आत्मा में ज्ञान है, शरीर में नहीं है। तो उनको भी आत्मा समझ करके ही ज्ञान देना है। इससे उनको भी अच्छा लगेगा। जैसे कि यह जौहर है तुम्हारे**



10-12-2025 प्रातःमुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

मुख में। इस ज्ञान की तलवार में जौहर भर जायेगा क्योंकि देही-अभिमानी होते हो ना। तो यह भी प्रैक्टिस करके देखो। बाबा कहते हैं जज करो - यह ठीक है? और बच्चों के लिए भी यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि बाप समझाते ही सहज करके हैं। चक्र लगाया, अब नाटक पूरा होता है, अभी बाबा की याद में रहते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान बन, सतोप्रधान दुनिया का मालिक बनते हैं फिर ऐसे ही सीढ़ी उतरते हैं, देखो कितना सहज बताते हैं। हर 5 हज़ार वर्ष के बाद मेरे को आना होता है।



मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ।

न मे पार्थस्ति कर्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवासम्बासव्यं वर्त एव च कर्मण॥
हे अर्जुन! मुझे इन तीनों लोकोंमें न तो कुछ कर्तव्य है और न कोई भी प्राप्त करनेयोग्य वस्तु अप्राप्त है, तो भी मैं कर्ममें ही बरतता हूँ॥ २२॥
यदि हाहं न वर्तेयं जातु कर्मण्यतन्त्रितः।
मम वर्त्तानुवर्तते मनुष्यः पार्थ सर्वशः॥
क्योंकि है पार्थ! यदि कदाचित् मैं सावधान होकर कर्मोंमें न बर्तूँ तो बड़ी हानि हो जाय; क्योंकि मनुष्य सब प्रकारसे मेरे ही मार्गका अनुसरण करते हैं॥ २३॥ अध्याय-३

इस समय के लिए है। यह अन्तकाल है। अभी इस समय बाप बैठ करके युक्ति बतलाते हैं कि मामेकम् याद करो तो सद्गति हो जायेगी। बच्चे भी समझते हैं कि पढ़ाई से यह बनूँगा, फलाना बनूँगा। इसमें भी यही है कि मैं जाकरके नई दुनिया में देवी-देवता बनूँगा। कोई नई बात नहीं है, बाप तो घड़ी-घड़ी कहते हैं नथिंगन्यु। यह तो सीढ़ी उतरनी-

चढ़नी है, जिन्ह की कहानी है ना। उसको सीढ़ी उतरने और चढ़ने का काम दिया गया। यह नाटक ही है चढ़ना और उतरना। याद की यात्रा से बहुत मजबूत हो जायेंगे इसलिए भिन्न-भिन्न प्रकार से बाप बच्चों को बैठ सिखलाते हैं कि बच्चे अभी देही-अभिमानी बनो। अभी सबको वापिस जाना है। तुम आत्मा पूरे 84 जन्म लेकर तमोप्रधान बन गई हो। भारतवासी ही सतो-रजो-तमो बनते हैं। दूसरी कोई नेशनल्टी को नहीं कहेंगे कि पूरे 84 जन्म लिए हैं। बाप ने आकरके बताया है नाटक में हर एक का पार्ट अपना-अपना होता है। आत्मा कितनी छोटी है। साइंसदानों को यह समझ में ही नहीं आयेगा कि इतनी छोटी आत्मा में यह अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। यह है सबसे वण्डरफुल बात। यह छोटी सी आत्मा और पार्ट कितना बजाती है! वह भी अविनाशी! यह ड्रामा भी अविनाशी है और बना-बनाया है। ऐसे नहीं कोई कहेंगे कि कब बना? नहीं। यह कुदरत है। यह ज्ञान बड़ा वण्डरफुल है, कभी कोई यह ज्ञान बता ही नहीं सकते हैं। ऐसे कोई की ताकत नहीं है जो



In 1901, a doctor named Duncan McDougall tried to prove the existence of a human soul. To do so, he measured the weight of a person at the moment of death. He did this with 6 patients and all of them experienced the same average weight loss being 21 grams.

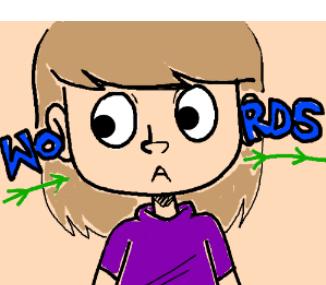
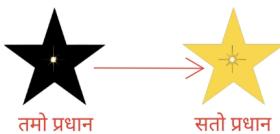
यह ज्ञान बताये।



Bk Mayank

तो अभी बच्चों को बाप दिन-प्रतिदिन समझाते रहते हैं। अभी प्रैक्टिस करो कि हम अपने भाई आत्मा को ज्ञान देते हैं, आपसमान बनाने के लिए। बाप से वर्सा लेने के लिए क्योंकि सब आत्माओं का हक है। बाबा आते हैं सभी आत्माओं को अपना-अपना शान्ति वा सुख का वर्सा देने। हम जब राजधानी में होंगे तो बाकी सब शान्तिधाम में होंगे। पीछे जय जयकार होगी, यहाँ सुख ही सुख होगा इसलिए बाप कहते हैं पावन बनना है। जितना-जितना तुम पवित्र बनते हो उतना कशिश होती है। जब तुम बिल्कुल पवित्र हो जाते हो तो गद्दी नशीन हो जाते हो। तो प्रैक्टिस यह करो। ऐसे मत समझना कि बस यह सुना और कान से निकाला। नहीं, इस प्रैक्टिस बिगर तुम चल नहीं सकेंगे। अपने को आत्मा समझो, वह भी आत्मा भाई-भाई को बैठकर समझाओ। रुहानी बाप

Coming soon...



रूहानी बच्चों को समझाते हैं इसको कहा जाता है
रूहानी स्प्रीचुअल नॉलेज। स्प्रीचुअल फादर देने

वाला है। जब चिल्ड्रेन पूरा स्प्रीचुअल बन जाते हैं,
एकदम प्योर बन जाते हैं तो जाकर सतयुगी तख्त
के मालिक बनते हैं। जो प्योर नहीं बनेंगे वो माला
में भी नहीं आयेंगे। माला का भी कोई अर्थ तो
होगा ना। माला का राज़ दूसरा कोई भी नहीं
जानते हैं। माला को क्यों सिमरते हैं? क्योंकि बाप
की बहुत ही मदद की है, तो क्यों नहीं सिमरे
जायेंगे। तुम सिमरे भी जाते हो, तुम्हारी पूजा भी
होती है और तुम्हारे शरीर को भी पूजा जाता है।
और मेरी तो सिर्फ आत्मा को पूजा जाता है। देखो
तुम तो डबल पूजे जाते हो, मेरे से भी जास्ती। तुम
जब देवता बनते हो तो देवताओं की भी पूजा
करते हैं इसलिए पूजा में भी तुम तीखे, यादगार में
भी तुम तीखे और बादशाही में भी तुम तीखे। देखो,
तुमको कितना ऊँचा बनाता हूँ। तो जैसे प्यारे बच्चे
होते हैं, बहुत लव होता है तो बच्चों को कुल्हे पर,
माथे पर भी रखते हैं। बाबा एकदम सिर पर रख

देते हैं। अच्छा!

किन शब्दों में आपका धन्यवाद करे...
 दिन रात की ये सेवा हम याद करे..



ज्ञान

योग

धारणा

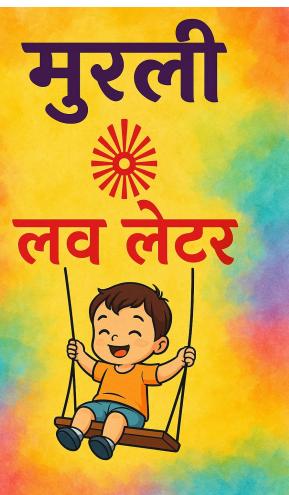
सेवा



अभी तो बाहों में झुलाते हो,
 पलकों में अपने बिठाते हो,
 ज्ञान रत्न से सजाते हो, मीठे
 मीठे बोल सुनाते हो।
 कैसे भूलेंगे तेरा बाबा, प्यार
 और दुलार।

कहाँ मिलेगा बाबा ऐसा,
 सतयुग में तेरा प्यार





मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रुहानी बाप की रुहानी बच्चों को नमस्ते।



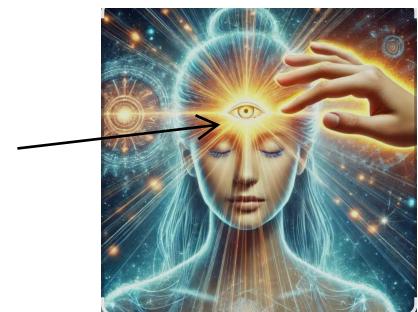
मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

धारणा के लिए मुख्य सारः-



1) **गायन और पूजन योग्य बनने के लिए स्प्रीचुअल बनना है, आत्मा को प्योर बनाना है। आत्म-अभिमानी बनने की मेहनत करनी है।**

2) **मनमनाभव के अभ्यास द्वारा अपार खुशी में रहना है। स्वयं को आत्मा समझकर आत्मा से बात करनी है, आंखों को सिविल बनाना है।**



वरदान:-

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

**मास्टर रचयिता की स्टेज द्वारा आपदाओं में भी
मनोरंजन का अनुभव करने वाले सम्पूर्ण योगी भव**

Finale Achievement

**मास्टर रचयिता की स्टेज पर स्थित रहने से बड़े से
बड़ी आपदा एक मनोरंजन का दृश्य अनुभव
होगी।**

**जैसे महाविनाश की आपदा को भी स्वर्ग के गेट
खुलने का साधन बताते हो,**

**ऐसे किसी भी प्रकार की छोटी बड़ी समस्या व
आपदा मनोरंजन का रूप दिखाई दे,
हाय-हाय X के बजाए ओहो ✓ शब्द निकले-दुख भी
सुख के रूप में अनुभव हो।**

**दुःख-सुख की नॉलेज होते हुए भी उसके प्रभाव में
न आये, दुःख को भी बलिहारी सुख के दिन आने
की समझें - तब कहेंगे सम्पूर्ण योगी।**

**स्लोगन:- दिलतख्त को छोड़ साधारण संकल्प
करना अर्थात् धरनी में पांव रखना।**

अव्यक्त इशारे -

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

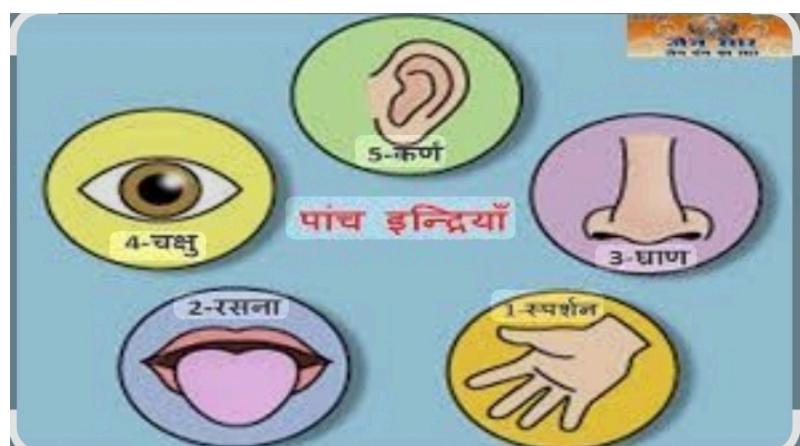
कर्म करते तन का भी हल्कापन, मन की स्थिति में

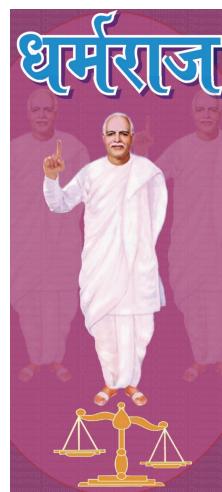
भी हल्कापन।

Subtle Point to understand

How imp. is every Action (not C)

कर्म की रिजल्ट मन को खींच न ले। जितना ही कार्य बढ़ता जाये उतना ही हल्कापन भी बढ़ता जाये। कर्म अपनी तरफ आकर्षित नहीं करे लेकिन मालिक होकर कर्म कराने वाला करा रहा है और करने वाले निमित्त बनकर कर रहे हैं - यह अभ्यास बढ़ाओ तो सम्पन्न कर्मातीत सहज ही बन जायेंगे।





अ

m.m.m....imp. ऐसे नहीं सोचना कि अभी कुछ समय पड़ा है, इतने में विनाश तो होना

Attention..!

नहीं है, यह नहीं सोचना। विनाश होना है अचानक, पूछकर नहीं आयेगा कि हाँ तैयार हो। सब अचानक होना है, आप लोग भी ब्राह्मण कैसे बनें? अचानक ही संदेश मिला, प्रदर्शनी देखी, सम्पर्क सम्बन्ध हुआ बदल गये। क्या सोचा था कि इस तारीख को ब्राह्मण बनेंगे? अचानक हो गया ना तो परिवर्तन भी अचानक होना है। आपको पहले माया और ही अलबेला बनायेगी, सोचेंगे हमने तो दो हजार सोचा था - वह भी पूरा हो गया, अभी तो रेस्ट कर लो। पहले माया अपना जादू फैलायेगी, अलबेला बनायेगी। किसी भी बात में, चाहे सेवा में, चाहे योग में, चाहे धारणा में, चाहे सम्बन्ध-सम्पर्क में यह तो चलना ही है, यह तो होता ही है.... , ऐसे पहले माया अलबेला बनाने की कोशिश करेगी। फिर अचानक विनाश होगा, पुर नहीं कहना कि बापदादा ने सुनाया ही नहीं, ऐसा भी होना है क्या! इसलिए पहले ही सुना देते हैं - अलबेले कभी भी किसी भी बात में नहीं बनना। चारों ही सबजेक्ट में अलर्ट, अभी भी कुछ हो जाए तो अलर्ट। उस समय नहीं कहना बापदादा अभी



44

May I have your Attention Please..!



ये पक्का समझ लो..

m.m.m....imp.

धर्मराज

आओ, साथ निभाओ, अभी थोड़ी शक्ति दे दो। उस समय नहीं देंगे। अभी जितनी शक्ति चाहिए, जैसी चाहिए उतनी जमा कर लो। सबको खुली छुट्टी है, खुले भण्डार हैं, जितनी शक्ति चाहिए, जो शक्ति चाहिए ले लो। पेपर के समय टीचर वा प्रिन्सीपल मदद नहीं करता।

10/12/25

(23-02-1997)

9.3 आलस्य, अलबेलापन और अवज्ञायें :

(अ) जैसे अमृतवेला प्रारम्भ होता है, तो चारों ओर सर्व बच्चे पहले तो नम्बर मिलाने का पुरुषार्थ करते हैं या फिर कनेक्शन जोड़ने का पुरुषार्थ करते हैं। फिर क्या होता है? **लाइन क्लीयर होने के कारण** कोई का तो जल्दी नम्बर मिल जाता है और कोई नम्बर मिलाने में ही समय बिता देते हैं। कोई-कोई नम्बर न मिलने के कारण दिलशिक्स्त बन जाते हैं और कोई नम्बर मिलाते तो बाप से हैं, परन्तु बीच-बीच में कनेक्शन माया से जुट जाता है। **ऐसा** माया इन्टरफियर करती है कि जो वह चाहते हुए भी कनेक्शन तोड़ नहीं सकते। जैसे यहाँ भी आपकी इस दुनिया में कोई राँग नम्बर मिल जाता है तो वह कहने से भी कट नहीं करते हैं। आप उनको और वह आपको कहेंगे कि कट करो। ऐसे ही माया भी उसी समय कमज़ोर बच्चों का कनेक्शन ही तोड़ देती है और उन्होंने को तंग भी करती है क्योंकि **तंग करने का कारण है कि** वे सारा दिन अलबेले और आलस्य के वश होते हैं और **उनका अटेन्शन कम होता है**। ऐसी अलबेली आत्माओं को माया भी विशेष वरदान के समय बाप की आज्ञा पर न चलने का बदला लेती है और ऐसी आत्माओं का दृश्य बहुत आश्चर्यजनक दिखायी देता है। १।१२।२५



अमृतवेला



(आ) अमृतवेले के थोड़े से समय के बीच अनेक स्वरूप दिखाई देते हैं। **एक** तो कभी-कभी बाप को स्नेह से सहयोग लेने की अर्जी डालते रहते हैं। कभी-कभी बाप को खुश करने के लिए बाप को ही बाप की महिमा और कर्तव्य की याद दिलाते रहते हैं कि आप तो रहमदिल हो, आप सर्वशक्तिवान हो, वरदानी हो, बच्चों के लिए ही तो आये हो आदि-आदि। कभी-कभी फिर **जोश में आकर, माया से परेशान हो** सर्वशक्तियों रूपी शास्त्र यूज करने का प्रयत्न करते हैं। कभी फिर

अमृतवेले पिछले दिन का प्रभाव और स्वयं की चेकिंग

तलवार चलाते हैं और कभी ढाल को सामने रखते हैं। लेकिन **जोश के साथ आज्ञाकारी, वफ़ादार और निरन्तर स्मृति-स्वरूप बनने का होश न होने के कारण, उन्होंने का जोश यथार्थ निशाने पर नहीं पहुँच सकता।** १०।१२।२५

(इ) कोई-कोई फिर ऐसे भोले बच्चे होते हैं जो कि ईश्वरीय प्राप्ति और माया के अन्तर को भी नहीं जानते। **निद्रा को ही शान्त स्वरूप और बीजरूप स्टेज समझ लेते हैं। अल्पकाल की निद्रा द्वारा रेस्ट के सुख को अतीन्द्रिय सुख समझ लेते हैं।** ऐसे अनेक प्रकार के दृश्य बच्चे दिखाते रहते हैं। ११।१२।२५

(ई) जो महारथी बच्चे अब तक गिनती के हैं जो **अष्ट रत्न अष्ट शक्ति स्वरूप** हैं, जिनके संकल्प, बोल और कर्म बाप समान हैं, ऐसे अष्ट शक्ति के अधिकार प्राप्त बच्चों को नम्बर मिलाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उन आत्माओं का कनेक्शन निरन्तर है। यह **वायरलेस का कनेक्शन वाइसलेस (निर्विकारी)** आत्माओं को ही प्राप्त होता है। **संकल्प किया और मिलन हुआ।** ऐसे वरदानी बच्चे बहुत कम हैं। यह है अमृतवेले का दृश्य। १२।१२।२५



If you wish to stay connected, Here is the link

TELEGRAM



WhatsApp